पद २८

(राग: देस - ताल: धुमाळी)

मना लाग रे गुरुपायीं। तयावांचुनी सद्गति नाहीं।।ध्रु.।। जीवेश्वर द्वैताद्वैताची कडसणी। निरसुनि भवऔषधातें देई।।१।। मनोहर म्हणे श्रीगुरुच्या कृपेनें। देहभान नुरेचि कांही।।२।।